As far as the question of balcklisting is concerned, I would require a fresh notice because I have to make enquiries. I do not have it readily.

प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा: मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि यह भेदभाव क्योंकि किया जा रहा है? आपने कहा कि पालिसी डिसीजन लिया जाता है। यह पालिसी डिसीजन लेने वाले लोग सारे के सारे अंग्रेजी समर्थक हैं और वे भारतीय भाषाओं के, हिन्दी के, संस्कृत के विरोधी हैं क्या यह सत्य नहीं है? अंग्रेजी पेपर को जो इतना ज्यादा दिया जा रहा है इसके बारे में इंक्वायरी करके कोई कदम उठायेंगे? क्या यह भी ठीक है कि क्रिटीकल, टफनैस, डिफिकल्ट और परपोर्ट एडवर्टीजमैंट्स बैन कर दिये हैं और दूसरे एडवर्टीजमैंट्स ज्यादा दिये जाते हैं? इसका फैसला क्या मिनिस्टर महोदय खुद करते हैं कि कौन-कौन से पेपर एमेनेबल नहीं है और उनको कम एडवर्टीजमैंट दिये जाते हैं या उस पर प्रतिबंध लगा दिया जाए? यह सार भेदभाव किया जा रहा है डीएवीपी की तरफ से। हिन्दुस्तान में कांग्रेस का समर्थन प्राप्त करने के लिए आने वाले दिनों में, जबकि इलेक्शन आ रहे हैं, पेपर्स की ट्विस्ट करने की जो पालिसी है क्या उस पालिसी के बारे में प्रकाश डालेंगे?

SHRI K.P. SINGH DEO: Sir, first and foremost, I would like to say, with all the emphasis at my command, that there is no discrimination; there is no arm-twisting. As I said, the policy guideline, the advertisement policy guideline is of 1980. This is what we are following even today, even in 1995. this has not been amended; not even in 1991. Probably, it has stood the test of time. But as I said, the main criteria were: the circulation and the pulling power of the newspaper. Even in regard to the rate...*(Interruptions)*...

प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा: हिन्दी का पांच लाख सरकुलेशन है और अंग्रेजी का 5 हजार लेकिन अंग्रेजी को ज्यादा देते हैं। पांच लाख सरकुलेशन है हिन्दी के पेपरों का उनको आप ज्यादा नहीं देते हैं। आप सरकुलेशन का क्या हिसाब बता रहे हैं? पांच हजार मुश्किल से छपता है अंग्रेजी अखबार get five times more advertisement than the Hindi newspapers with a circulation of five lakhs.

SHRI K.P. SINGH DEO: If the circulation is more, they will get more. Sir, the Rate Structure Committee is not an in-house Committee. *(Interruptions)*

प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा: पंजाब केसरी और दूसरे हिन्दी के पेपर्स का सरकुलेशन अंग्रेजी के अखबारों से तीन गुना है।

श्री शंकर दयाल सिंह: आप अगर विदेशी भाषाओं को देते हैं तो भारतीय भाषाओं को भी दीजिए।

SHRI K.P. SINGH DEO: Even though it was an expert opinion the Rate Structure Committee was set up in 1991, not by our Government, but by the previous Government.... we took the recommendations but added our own innovation to the small, and part of the medium newspapers, that is, up to 50,000 circulation. Whatever the Rate Structure Committee had recommended, we gave 15 per cent more all down the scale, and also we doubled the advertisements. That is how we have been trying to help the small and medium newspapers and, in spite of the expert committee, Government has taken this initiative. But it is subject to periodic review, and we will review it again in the light of what hon. Members have said, and we will see if something more is practicable within the constraints of our resources.

आकाशवाणी द्वारा प्रसारित किये जाने वाले समाचारों का संकलन

*23. **श्री सतीश प्रधान:** क्या सूचना और प्रसारण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि आकाशवाणी अन्य देशों द्वारा प्रसारित किये जाने वाले समाचारों को संकलित करती है;

(ख) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है; और

(ग) इस समय कौन-कौन से देशों से प्रसारित किये जाने वाले समाचार संकलित किये जा रहे हैं और कौन-कौन सी भाषाओं के समाचार संकलित किये जा रहे हैं?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING (SHRI K.P. SINGH DEO): (a) to (c) a statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) Yes, Sir.

(b) and (c) The Central Monitoring Service of All India Radio monitors news bulletins broadcast from 26 countries in 13 languages as per details given below:—

Country	Language
Australia	Arabic
Austria	Bengali
Bangalesh	Chinese
Canada	English
China	
Dubai	French
France	German
Germany	Hindi
Indonesia	Indonesian
Iran	Kashmiri
Israel	Nepali
Japan	Persian
Jordan	Russian
Kuwait	Urdu
Nepal	
Netherlands	
North Korea	
Pakistan	
Russia	
Sri Lanka	
Sweden	
Switzerland	
Ukraine	
United States of America	
United Kindom	
Uzbekistan	

श्री सतीश प्रधान: क्या यह सच है कि बहुत से एशियाई और अन्य दूर-दराज के देश भी भारत के खिलाफ आग उगलने का काम करते आए हैं? यदि हां, तो ऐसे कौन कौन से देश हैं जिन्होंने पिछले तीन वर्षों मे भारत के खिलाफ दुष्प्रचार किया है?

SHRI K.P. SINGH DEO: Sir, it has come to the notice of the Government as well as various authorities, because of the monitoring, that certain countries are inimical to India and they do indulge in an anti-India tirade. I do not think it would be proper for me to name the countries on the floor of the House because of public interest. In fact, if the hon. Member is aware of the countries which are doing it — it is obvious; it is in different media and everything—we would not like to name those countries because of various implications. Sir, I would seek your protection on this. But if you insist, Sir, I will have to.

MR. CHAIRMAN: I think the Member can imagine the countries. Second supplementary.

SHRI SATISH PRADHAN: Sir, actually, I was expecting that truth should come out. But, anyhow मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या भारत सरकार ऐसे दुष्प्रचार का जवाब देने के लिए कोई योजना अमल में लाना चाहती है? यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है?

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: Do you expect that from Doordarshan?

SHRI K.P. SINGH DEO: Sir, our media does not believe in propaganda like those foreign countries which are inimical to India and who have been indulging in it. We believe in telling the truth, and whenever such anti-India broadcasts are brought to our notice —which are being monitored—the true picture, the correct picture, the factual picture, is broadcast through our various media, radio as well as other media, to see that the factual and true picture comes out. But we do not indulge in counter-propaganda or propaganda as such.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: श्रीमन्, मुझे लिस्ट को देखकर थोड़ा सा ताज्जुब हुआ है। इसमें कई फोरेन स्टेशन्स के नाम हैं लेकिन इसमें बर्मा और अफगानिस्तान का नाम नहीं है। इनकी आप मानेटरिंग नहीं करते हैं।

इसका क्या कारण है? दोनों हमारे पड़ोसी देश हैं और पड़ोसी देशों की मानेटरिंग होनी चाहिए। तो इन दोनों देशों, बर्मा और अफगानिस्तान को क्यों छोड़ा गया है? क्या इनकी मानेटरिंग आगे शुरू करेंगे, विशेषतः बर्मा की, जो हमारे साथ दोस्ती नहीं रखता?

SHRI K.P. SINGH DEO: Sir, our monitoring of these broadcasts of the various countries—these 26 countries which I have given in the statement—is for the prime reason of acquisition of news as well as monitoring for our news bulletins for world news and international news. But, as far as Burma and Afghanistan are concerned, it is a suggestion. We will see whether it is possible to do it and whether it is up to our requirements or not. We shall have to examine this. But I would not like to give an assurance.

श्री शंकर दयाल सिंह: सभापति महोदय, यह जो प्रश्न है, मैं समझता हूं इसका सीधा प्रभाव हमारे ऊपर पड़ता है और भारतीय श्रोताओं के ऊपर पड़ रहा है, वह हमारे पड़ोसी मुल्कों से अधिक है और खास कर के बिना नाम लिये मैं कहना चाहता हूं कि हमारा एक पड़ोसी मुल्क है उनकी ओर से जो कुछ भी प्रसारण होता है उससे बहुत अधिक झूठी बातें भारतीय मानस में पहुंचती हैं। क्या सरकार इस बात का कुछ प्रबन्ध कर सकेगी कि जो गलत बातें दूसरे देशों की आकाशवाणी द्वारा कही जाती हैं, वह अपनी आकाशवाणी, आल इण्डिया रेडियो के द्वारा खास कर के उन प्वाइंट्स को ले कर सच्चाई श्रोताओं के सामने लाई जाए, क्या सरकार ने इस संबंध में कोई प्रयत्न किया है?

SHRI K. P. SINGH DEO: Sir, what the hon. Member has said is right. This is exactly what we are doing. Whenever such aberrations are noticed by the Monitoring Cell. All India Radio makes efforts to see that the factual position is broadcast over those areas.

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी: सभापति जी, मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि क्या कोई इस प्रकार का इंस्टीट्यूशनल मेकेनिज्म उन्होंने अपने मंत्रालय में कायम किया है कि यदि किसी की तरफ से हमारे खिलाफ कोई प्रचार किया जा रहा है तो वह संबंधित मंत्रालय को उसको भेजे। केवल रेडियो के द्वारा ही नहीं, अन्य माध्यमों से भी किस प्रकार से उस दुष्प्रचार को रोका जा सकता है या जिसके संबंध में स्पष्ट किया जा सकता है, स्पष्टीकरण दिया जा सकता है, उसके लिए क्या आपने कोई प्रबन्ध किया है?

SHRI K. P. SINGH DEO: We are doing exactly that, Sir Whenever it comes to our notice, we do inform the other Ministries concerned. It is not only All India Radio but other media also which are being utilised by other Ministries.

Increase in time for Regional News on Bangalore Doordarshan

*24. SHRI GUNDAPPA KORWAR: Will the Minister of INFORMATION AND BROADCASTING be pleased to state:

(a) the time allotted for regional news (Kannada) on Bangalore Doordarshan Kendra;

(b) whether Government propose to enhance this news time; and

(c) if so, the details thereof?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING (SHRI K. P. SINGH DEO): (a) Fifteen minutes daily.

(b) There is no such proposal at present.

(c) Does not arise.

श्री गुंडप्पा कोरवार: सभापति महोदय, आज की दुनिया में दूरदर्शन का बहुत महत्व है। पढ़े लिखे लोगों और न पढ़े लिखे लोगों की दिलचस्पी दूरदर्शन में बढ़ती जा रही है। इसलिए मैंने मंत्री महोदय से रीजनल लैंग्वेज कन्नड़ में जो न्यूज आती हैं उसके बारे में यह सवाल किया है। गांव के लोग आज की दुनिया के और देश के हालात को जानना चाहते हैं। न्यूजपेपर अगर जाते हैं तो पढ़े लिखे लोग कम हैं और न पढ़े लिखे लोग गांवों में ज्यादा हैं, वह न्यूजपेपर पढ़ नहीं सकते हैं। दूरदर्शन से जो न्यूज आती है उससे वह दुनियां की हालत मालूम कर सकते हैं। कन्नड़ का न्यूज दूरदर्शन से सुबह आता है, शाम को आता है लेकिन दोपहर के समय नहीं आता